ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

उन्नीसवीं शताब्दी में जयपुर राज्य के शासको द्वारा किए गए सुधार के कार्य–स्त्रियों के विशेष संदर्भ में

ममता चौपड़ा शोधार्थी भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर.

सन् 1817–18 ई. में अंग्रेज सरकार व विभिन्न राजपूत राज्यों के मध्य सहायक संधियाँ स्थापित हुई। इस दौर में राजपूताना में विभिन्न प्रकार की सामाजिक बुराईयाँ जैसे– बाल–विवाह, कन्यावध, सती प्रथा, दास प्रथा, डाकण प्रथा, दास प्रथा इत्यादि प्रचलित थी। कुछ प्रबुद्ध ब्रिटिश प्रशासकों जैसे कर्नल टॉड एवं कैप्टन हॉल ने इन बुराईयों को दूर करने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास किए, किन्तु बिना किसी ठोस कानून के अभाव में उनके प्रयास भलीभूत न हो सके।[1]

राजपूताना में समाज सुधारों की पृष्ठभूमि तब तैयार हुई जब लॉर्ड विलियम बैंटिंग 1832 में भारत के गवर्नर जनरल बने। बैंटिंग के विचारों पर बैंथम व मिल के उदारवादी विचारों का प्रभाव पड़ा। लॉर्ड बैंटिंग ने 1829 में सती प्रथा को अवैध घोषित कर भारत में पॉलिटिकल एजेन्टों को समाज सुधार की दिशा में प्रयत्न करने को प्रेरित किया। 1832 में राजपूताना में 'राजपूताना एजेन्सी' का गठन कर एजेन्ट टू द गवर्नर जनरल (ए.जी.जी) के पद का सृजन किया गया। इस प्रकार पाश्चात्य विचारों से युक्त ब्रिटिश प्रशासकों के युग का सूत्रपात महाराजा रामसिंह के काल से हुआ। जयपुर राज्य के शासकों द्वारा किए गए समाज सुधार के कार्य निम्नलिखित है :–

1. महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय (1831–1880) के समाज सुधार कार्य –

महाराजा राम सिंह 2 वर्ष अल्पायु में जयपुर के राजसिंहासन पर सुशोभित हुए। बाल्यकाल से ही ब्रिटिश रेजीडेन्टों की देखरेख में पले बढ़े थे। अतः अंग्रेज जाति के व्यक्तिगत संपर्क व खुली सोच का उन पर सदैव प्रभाव पड़ा।[2] मेजर लुडलो जनवरी 1844 से दिसम्बर 1847 तक ब्रिटिश रेजीडेन्ट के पद रहे। इसी दौरान उन्होंने राम सिंह को नैतिक व राजनैतिक शिक्षाएँ प्रदान की जिनका रामसिंह के भावी जीवन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। 1857 की क्रांति का सूत्रपात होने के कारण ब्रिटिश साम्राज्ञी की आज्ञा के अनुसार सभी देशी रियासते सीधे ब्रिटिश नियंत्रण में आ गई जिससे राज्यों में आधुनीकीरण की प्रगति हुई और राजनैतिक, सामाजिक व शैक्षिक आदि क्षेत्रों में सुधार के नये युग का सूत्रपात हुआ। जयपुर राज्य इन सभी कार्यो में आगे रहा।

महाराजा राम सिंह के समाज सुधार के कार्य निम्नलिखित है :–

(1) महाराजा राम सिंह को जयपुर के आधुनिकीरण का श्रेय दिया जाता है। महाराजा ने अंग्रेजी आदर्शो के अनुरूप जयपुर की सुन्दरता बढ़ाने हेतु करोड़ों रूपये खर्च किए। जयपुर राज्य को गुलाबी रंग से इन्हीं के समय रंगा गया। मिउनिसिपैलिटी का गठन, राजमार्गो की लम्बाई में वृद्धि की, जल–निकास हेतु नालियों का निर्माण, उद्यानों का निर्माण, किसानों हेतु सरोवरों का निर्माण, दिल्ली से जयपुर से रेल द्वारा जोड़ने का कार्य[3] इसके अतिरिक्त डाक, तार, प्रेस व अखबार इत्यादि की स्थापना कर प्रजा को लाभ पहुँचाया।

(2) राज्य में मेजर लाडलो ने 1844 में वर्तमान शिक्षा प्रणाली लागू की। महाराजा ने संस्कृत, उर्दू, विद्यालय व अंग्रेजी शिक्षा हेतु कॉलेजों का निर्माण करवाया। 1844 में जयपुर में महाराजा हाई स्कूल की स्थापना की जो 1873 में महाराजा कॉलेज के रूप में अस्तित्व में आया।[4]

(3) 1866 में बालिका शिक्षा हेतु महाराजा गर्ल्स हाई स्कूल की स्थापना की। मुस्लिम समाज की बालिकाएँ भी उस समय विद्यालय में नामांकित थी। 1875 में महाराजा द्वारा बालिकाओं के लिए 3 ब्रांच स्कूल घाट दरवाजा, गंगापोल और हथरोई में खोले गये। 1877 में आमेर व सांगानेर में और 2 ब्रांच स्कूल खोले गये।[5] जून 1867 में स्कूल ऑफ आर्ट्स भी खोला गया। 1875 में ए.जी.जी. की रिपोर्ट में रामसिंह की प्रशंसा करते हुए कहा गया था कि महाराजा रामसिंह के समय शिक्षा में जितनी प्रगति हुई, उतनी राजपूताना की किसी और रियासत में नहीं हुई।

(4) 26 मार्च, 1869 को महाराजा द्वारा 'सोशल साइन्स कॉन्फरेन्स' नामक संस्था का निर्माण किया गया, जिसके द्वारा सामाजिक कुरीतियों एवं रूढ़ियों में सुधार हेतु प्रयास किए गए। 1844 में जयपुर राज्य में सती प्रथा के निषेध हेतु कानून का निर्माण किया गया। राजगुरू भट्ट, पं. सुखराम, झिलाय, चचेवर, लाडनूं, नींदड़ आदि के ठिकानेदारों ने भी इस सती–निषेध का समर्थन किया।[6]

(5) 1 जुलाई 1844 को त्याग नियम पारित कर मालगुजारी के 8 वें हिस्से तक निर्धारित किया।

(6) 1839–44 के मध्य कन्या–वध को गैर कानूनी घोषित किया गया।

2. महाराजा माधोसिंह द्वितीय (1862–1922) के समाज सुधार कार्य :–

महाराजा रामसिंह द्वितीय ने पुत्रहीन अवस्था में प्राण त्यागे। अतः उन्होंने अपने कुटुम्बी ईसरदा ठिकाने के कायमसिंह को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया जिन्होंने महाराजा माधोसिंह द्वितीय के नाम से सिंहासन ग्रहण किया। महाराजा रामसिंह की भांति ही महाराजा माधोसिंह द्वितीय ने भी प्रजा कल्याण हेतु लोकोपकारी कार्य किए।

- छप्पन के अकाल के दौरान जनता को भोजन सामग्री प्रदान करने हेतु लाखों रूपये खर्च कर अकाल राहत कोष स्थापित किया। महाराजा की सलाह पर ही लार्ड कर्जन ने ऑल इंडिया फैमिन फंड की स्थापना की।
- 1881 में महाराजा ने जयपुर में इकोनोमिक और इण्डिस्ट्रियल म्यूजियम की स्थापना की।
- महाराजा माधोसिंह द्वितीय को सुनियोजित आर्थिक विकास के लिए जाना जाता है। इनके द्वारा सार्वजनिक निर्माण विभाग का नये सिरे से गठन किया गया। सड़को व नहरों का निर्माण किया गया, रेलवे लाईनों का निर्माण किया गया। 1907 में सांगानेर से सवाई माधोपुर तक की 73 मील लंबी व 1916 मे झुन्झुनू तक की 108 मील लंबी रेल्वे लाईन शुरू हुई।[7]
- महाराजा माधोसिंह ने स्त्री शिक्षा व जनस्वास्थ्य हेतु अनेक कार्य किए। विज्ञान की प्रयोगशाला खोली गई। 1881 में जयपुर राज्य में गर्ल्स स्कूलों की संख्या 11 थी जहां 748 छात्राएं नामांकित थी।[8] लेडी हॉर्डिंग के नाम पर एक जनाना अस्पताल खोला गया।

3. सवाई मानसिंह द्वितीय (1912–1970) द्वारा किए गए समाज सुधार के कार्य :–

मोर मुकुट सिंह जो सवाई मानसिंह द्वितीय के नाम से जयपुर के राजसिंहासन पर 11 वर्ष की आयु में विराजमान हुए। इस समय उनके नाबालिग होने के कारण 1931 तक राजकाज संचालन 'रीजेन्सी कॉन्सिल' द्वारा हुआ। 14 मार्च 1931 को महाराजा को समस्त शासनाधिकार प्राप्त होने पर यह कॉन्सिल भंग कर दी गई। महाराजा ने रामसिंह के समय से चली आ रही शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित किया 1921 में रीजेन्सी कॉन्सिल का नाम बदलकर 'महकमा खास' कर दिया। 1923 में कानूनों का एकीकरण किया गया।

इनके समाज सुधार निम्नलिखित है :–

- 1923 में महाराजा द्वारा सेटलमेंट कमिश्नर की नियुक्ति की गई तथा 1942 तक समस्त खालसा गांवों की पैमाइश की गई।
- बड़ी संख्या में शिक्षण संस्थान खोले गये तथा शिक्षा पर वार्षिक बजट को 1 लाख रूपये से बढ़ाकर 5 लाख रूपये वार्षिक किया गया।[9]
- 1926–27 में 5 प्राथमिक विद्यालय हिंडौन, दौसा, महुवा, सवाई माधोपुर व कोटकासिम मे स्थापित किए गए।[10] महाराजा मानसिंह ने एक गर्ल्स स्कूल चिड़ावा में खोला। विभिन्न कन्या विद्यालयों पर 1937–38 ई. में जयपुर राज्य द्वारा 47,748 रूपये व्यय किए गए।
- महाराजा मानसिंह द्वारा स्त्री शिक्षा हेतु जो उल्लेखनीय प्रयास किए गए इन प्रयासों में उनकी पत्नि महारानी गायत्री देवी का योगदान भी अविस्मरणीय रहा। गायत्री देवी ने स्त्री शिक्षा में बाधक तत्त्व के रूप में पर्दा प्रथा को माना। उनका मानना था कि जब तक प्रथा समाज में रहेगी स्त्रियों की उन्नति नहीं हो पाएगी। अतः इस हेतु स्त्री शिक्षा का अत्यधिक प्रचार–प्रसार आवश्यक माना। गायत्री देवी व महाराजा के संयुक्त प्रयासों से 1943 में एक गर्ल्स स्कूल स्थापित किया गया। जो महारानी गायत्री देवी स्कूल के रूप मे विख्यात है। वर्तमान समय में भी स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में यह विद्यालय एक बहुत बड़ा नाम है।
- महाराजा मानसिंह द्वितीय के व्यक्तिगत प्रयासों के अतिरिक्त जयपुर प्रतिनिधि सभा में जो अधिनियम पास किए गए उनके द्वारा भी समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने में सहायता मिली।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि उन्नीसवीं शताब्दी में महिला कुरीतियों को दूर करने में महाराजा सवाई राम सिंह द्वितीय, माधोसिंह द्वितीय व मानसिंह द्वितीय का योगदान उल्लेखनीय रहा। जयपुर राज्य के आधुनिकीकरण, संचार साधनों डाक, तार, सड़क, राजमार्गो का निर्माण हुआ। महाराजा सवाई राम सिंह द्वितीय द्वारा आधुनिक शिक्षा की नींव रखने से ही जयपुर में आधुनिक शिक्षा का सूत्रपात हुआ। स्त्रियों के प्रति जो कुरीतियाँ थी उसके मूल में मुख्य कारण अशिक्षा थी अतः शिक्षा के महत्त्व को सभी प्रशासकों ने महत्त्वपूर्ण मानते हुए शिक्षा के प्रसार हेतु उल्लेखनीय कार्य किए।

संदर्भ

1 वशिष्ट, 'विजय कुमार राजपूताना एजेन्सी', (1832–1858) पृ. 231, आलेख प्रकाशन जयपुर
2 सिंह, 'चन्द्रमणि जयपुर राज्य का इतिहास' पृ 129, नया प्रकाशक, जयपुर
3 शर्मा, हनुमान, 'जयपुर राज्य का इतिहास', पृ. 302, शब्द महिमा प्रकाशन
4 राजस्थान डिस्ट्रीक्ट गजेटियर्स, जयपुर, पृ. 683
5 बैन, 'आर. ए. ई., नोट्स ऑन जयपुर, अध्याय 7, पृ. 94
6 पो. क. 23 सितम्बर 1844, जनरल नं. 43, 20 अक्टूबर 1845, नं. 446
7 गहलोत, जगदीश सिंह., 'कछवाहों का इतिहास', पृ. 216, यूनिक ट्रेडर्स
8 आर. ए. आर., जयपुर एजेन्सी रिपोर्ट, 1885–1887, पृ. 76
9 अजमेरा, जैन, केसरलाल, 'द जयपुर एल्बम चैप्टर', पृ. 15, राज. डाइरेक्ट्रिज पब्लिसिंग हाउस, 1935
10 आर. ए. आर., जयपुर, 1933–34, पृ. 51